सर्वपंथ समादर मंच

एक रास्ता

दत्तोपंत ठेंगड़ी

प्रबोधन मालिका क्रमांक 10

© भारतीय श्रमशोध मंडल

प्रकाशन 13 मार्च, 1998

प्रकाशक श्री अनंत करंबेलकर
भारतीय श्रमशोध मंडल
3122, संगत्राशान, पहाड़गंज,
नई दिल्ली-110 055

आवरण नवीन

मूल्य आठ रुपये

मुद्रक तिलक प्रेस
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

सर्वपंथ समादर मंच
एक रास्ता

दत्तोपंत ठेंगड़ी

भारतीय श्रमशोध मंडल

3122, संगत्राशान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110 055

दो शब्द

भारतीय मजदूर संघ के बढ़ते हुए आयामों में एक है "सर्वपंथ समादर मंच"। भा०म०सं० के पदाधिकारियों में ईसाई, मुस्लिम, सिक्ख, जैन, बौद्ध आदि अन्यान्य पंथों के कार्यकर्ता हैं। उनलोगों ने सोचा कि यदि हम आर्थिक माँगों पर एक जुट होते हैं और हम में एकात्मता है तो मजहब के कारण आपस में झगड़े क्यों होंगे ? इसलिए उनका एकत्र होना शुरु हुआ।

हालाँकि सर्वपंथ समादर मंच भारतीय मजदूर संघ प्रणीत संस्था है तो भी यह केवल मजदूरों तक ही सीमित नहीं। समाज के सभी पंथों के सभी घटक पक्ष जिसमें प्राध्यापक, शिक्षक, व्यापारी, उद्योजक, विधिज्ञ, डॉक्टर्स, सामाजिक कार्यकर्ता आदि आते हैं इस मंच पर एकत्र हो सकते हैं। निकट भविष्य में इस पंथ का तेजी से विस्तार होने वाला है।

सर्वपंथ समादर मंच के इंदौर बैठक में मा० दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का भाषण जिन्होंने सुना उन्होंने कहा कि इसे पुस्तक के रुप में प्रकाशित होना चाहिए। यह जिम्मेदारी भारतीय श्रमशोध मंडळ ने ली। भाषण की रिकॉर्डिंग अच्छी नहीं हुई थी इसलिये बार बार सुनकर उसे लीपिबद्ध किया गया। यह अत्यंत कठिन कार्य श्री विद्यानंद आचार्य ने किया और इसे सुचारु रुप देने की जिम्मेदारी भा०म० संघ के ज्येष्ठ नेता पंडित रामप्रकाश मिश्रा जी ने पूर्ण की।

श्री अशोक वर्मा और श्री जगदीश जोशी इनके सहयोग के बिना यह पुस्तिका प्रकाशित होना कठिन था। तिलक प्रींटिंग प्रेस, नई दिल्ली ने अल्पकाल में इसे मुद्रित की। हम इन सभी के ऋणी हैं।

शुक्रवार, फाल्गुन पूर्णिमा
विक्रमी संवत् 2054

मुकुंद गोरे
न्यासी

सर्वपंथ समादर मंच

मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का भाषण (इंदौर)

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मंच पर आसीन सभी सम्माननीय महानुभाव और इस सभागृह में उपस्थित इंदौर के सम्माननीय और समझदार नागरिक बंधुओं और भगिनी गण !

स्व० विद्यार्थी जी का स्मरण

आज हम श्री गणेश शंकर विद्यार्थी जी का सम्मान कर रहे हैं। इसकी भूमिका हमारे आलमगीर गोरी जी ने आपके सामने रखी। जब 'सर्वपंथ समादर मंच' का यह निर्णय प्रकाशित हुआ, तो दो तरह की आपत्तियाँ उठायी गई। कुछ लोगों ने कहा कि "सांप्रदायिक एकता के बारे में गणेश शंकर विद्यार्थी से भी अधिक अच्छे भाषण देने वाले, लेख लिखने वाले, राजनेता आज भी मौजूद हैं, आप इनका सम्मान कर रहे हैं, उनका क्यों नहीं" ? दूसरों ने कहा–'गणेश शंकर विद्यार्थी कांग्रेस के नेता थे। हमलोग तो कांग्रेस के पक्ष में नहीं हैं, फिर क्यों उनका सम्मान करना' ?

दोनों का पहले मैं संक्षेप में जवाब देता हूँ। आज राजनीतिक दल जातियाँ हो गई हैं। हर पार्टी यानी एक जाति। 1937 ई० तक कांग्रेस राजनीतिक दल नहीं थी। वह राजनीतिक मंच था। जिसके कारण सभी देशभक्त उस मंच पर एकत्रित रहते थे। जिन दिनों गणेश शंकर विद्यार्थी का आत्मबलिदान हुआ, लगभग उन्हीं दिनों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक व निर्माता परमपूजनीय डॉ० हेडगेवार जी ने व्यक्तिगत हैसियत में कांग्रेस के नेतृत्व में कांग्रेस के झंडे के नीचे महात्मा गांधी के आगे स्वयं झंडा–सत्याग्रह किया था और जेल गए लोग इन बातों को लिंक नहीं कर पाते कि वे कांग्रेस के सिपाही के नाते जेल गए थे। हालाँकि इधर उन्होंने ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का निर्माण किया था। वे व्यक्तिगत हैसियत से जेल गये कारण, उस समय कांग्रेस कोई पार्टी नहीं थी। '37 के बाद वह पार्टी बन गई।

इसलिए आज के वातावरण के आधार पर उस समय की कल्पना करना गलत बात है और, दूसरी बात यह है कि 'सेकुलर' शब्द का अर्थ समझने की कोशिश भी न करते हुए केवल मुस्लिम वोट बैंक की तरफ नजर रखते हुए सामंजस्य की बात करने वाले नेता बहुत हैं। मुस्लिम वोट बैंक का उद्देश्य ध्यान में रखकर गणेश शंकर विद्यार्थी ने आत्मबलिदान नहीं किया। ऐसा कोई अल्टेरियल मोटिव लेकर उनका आत्मबलिदान नहीं हुआ। इस विशुद्ध भावना से हुआ कि

समाज में एकता होनी चाहिए। और उनके बलिदान से हमें संदेश मिलता है कि वास्तव में यदि विभिन्न गुटों में केवल हिंदू मुसलमान में नहीं, विभिन्न गुटों में भी कुछ स्थायी एकता निर्माण करनी हो तो वह केवल भाषणों से नहीं होती, प्रचार से नहीं होती, टी०वी०, रेडियो, समाचारपत्रों से नहीं होती। जब उस एकता के लिए आत्मबलिदान करने वाले ईमानदार लोग तैयार होंगे तभी एकता हो सकती है। यह संदेश उनके जीवन से हमें मिलता है। इसलिए हम गणेश शंकर विद्यार्थी का सम्मान कर रहे हैं।

अभी जो कुछ बातें पूर्व–वक्ता ने बतलायी वह सभी बातें ठीक हैं। जो वे बोल रहे हैं, मैं उससे शत् प्रतिशत सहमत हूँ, किंतु मेरा एक ही कहना है कि प्रश्न को ठीक ढंग से समझ लीजिए। राजनेताओं के समान मत कीजिए कि मुसलमानों का वोट चाहिए तो एक अलग बात बोलना, हिंदुओं का चाहिए तो अलग बात बोलना, जाटों का चाहिए तो अलग बात बोलना। राजपूतों का चाहिए तो अलग बात बोलना। ब्राह्मण, ठाकुर का चाहिए तो अलग बात बोलना। फारवर्ड हैं, बैकवर्ड हैं, ओ.बी.सी. हैं, दलित हैं–सबके लिए अलग–अलग बोलना।

मैं पूछता हूँ कि हिंदू–मुसलमान एक हैं क्या ? ऐसा नहीं है। आज की व्यवस्था ऐसी है जिसमें तरह–तरह के भेद हैं। केवल हमारे हिंदू–मुस्लिम एकता की बात करने से व्यवस्था में पर्याप्त समाधान हो जाएगा, क्या आप ऐसा समझते हैं ? बिहार जैसे प्रदेश में अपरकास्ट और बैकवर्ड क्लास के बीच खून–खराबे तक मारपीट चलती है। कई प्रदेशों में पद्दलित विरुद्ध सवर्ण, और सवर्ण में भी ब्राह्मण–ठाकुर, जाट–गुर्जर के नाम पर खून–खराबे तक मारपीट चलती है तो, यह जो एकता का प्रश्न है वह सिर्फ हिंदू–मुस्लिम तक ही सीमित है ऐसा समझना बिल्कुल गलत है।

यह सोचना होगा कि सारा वातावरण ऐसा क्यों है ? इसलिए समस्या को ठीक ढंग से समझनी चाहिए। मेरी शिकायत यह है कि हमलोग समस्या को ठीक ढंग से समझना नहीं हैं और फिर सोल्युशन ढूंढने का प्रयास करते हैं। आलविन टॉफलर ने कहा है कि "The right question is more important than right answers to wrong questions". गलत प्रश्नों का सही उत्तर देने से ज्यादा महत्वपूर्ण बात है कि प्रश्न ही सही रहे।

इसके लिए सबसे पहले "प्रश्न क्या है ?" ये समझना आवश्यक है। जैसे कि केवल हिंदू–मुसलमान में झगड़ा है ऐसा है क्या ? मैंने जाट विरुद्ध नॉन जाट झगड़े देखे हैं; जाट विरुद्ध गुर्जर मार पीट देखे हैं। ब्राह्मण, ठाकुर विरुद्ध बैकवर्ड क्लास का झगड़ा चलता है। झगड़े क्यों हैं ? सारे हिंदू एक हैं क्या ? सारे मुसलमान भी एक हैं क्या ? आज हम हिंदू–मुसलमान एकता की बात करते हैं, सारे मुसलमान भी एक हैं क्या ? लखनऊ में हर दो साल में एक बार शिया–सुन्नी मार पीट होती है–पाकिस्तान है। कहते हैं वह इस्लामिक स्टेट है। वहाँ सिंध के

मुसलमान पाकिस्तान से अलग होना चाहते हैं। बलूचिस्तान पाकिस्तान से अलग होना चाहता है, पख्तुनिस्तान पाकिस्तान से अलग होना चाहता है। पंजाब में शिया–सुन्नी के झगड़े चलते हैं, अहमदिया लोगों की पिटाई होती है। इतना ही नहीं, जिन्होंने पाकिस्तान का प्रस्ताव सर्वप्रथम सिंध के एसेबंली में रखा वे जी० एम० सईद उन्होंने विभाजन की बात की इसलिए उनको पाकिस्तान में भी जेल में रखा गया। वे जब हिंदुस्तान आए थे तब उन्होंने कहा कि मुझे आज महसूस हो रहा है कि मैनें गलती की। उस समय जो माहौल था उसके बहाव में मैं बह गया। आज मैं समझ रहा हूँ कि केवल रिलीजन के आधार पर कोई राष्ट्र निर्माण नहीं हो सकता और इस दृष्टि से यह जो इस्लामिक नेशन नाम की चीज है, वह गलत है। जी०एम० सईद ने स्पष्ट रूप से और जोर देकर कहा कि मैं अल्ला का इसलिए शुक्रगुजार हूँ कि मुझे अल्ला ने समझदारी आने के लिए आवश्यक जिंदगी दी। जिसके कारण मैं यह सब महसूस कर रहा हूँ और भाषण दे रहा हूँ। यदि मैं पहले मर जाता तो पाकिस्तान जिंदाबाद कहते हुए मर जाता।"

आपसी झगड़े दोनों में है

इसी तरह क्या दुनिया के सारे मुसलमान एक हैं ? इराक और इरान का झगड़ा क्या हिंदू–मुसलमान का झगड़ा है ? इराक और कुर्द का झगड़ा क्या हिंदू और मुसलमान का झगड़ा है ? क्या सारे अरब कंट्रीज एक हैं ? अमरीका के प्रलोभन में आकर सऊदी अरब एवं इजिप्ट ने इराक के खिलाफ मोर्चा लगाया था। ये क्या हिंदू–मुसलमान का झगड़ा था ? आप जरा गौर से सोचिए ! प्रश्न को ठीक ढंग से फ्रेम कीजिए। Framing of question is more important. इसलिए कारण क्या है वह पहले समझ लेने की आवश्कता है। केवल हिंदू–मुसलमान का सवाल उठाना वास्तविकता से दूर की बात है, क्योंकि ये सारे तो मुसलमानों के आपस केझगड़े हैं हिंदुओं के आपस के झगड़े हैं।

झगड़े क्यों है ?

झगड़े क्यों हैं, यह प्रश्न है ? इस दृष्टि से कुछ महत्व की बातें मैं बोलना चाहता हूँ। पहली बात, यदि हिंदू एक रिलीजन है, इस्लाम एक रिलीजन है और यदि दोनों अलग–अलग रिलीजन हैं तो दोनों में हमेशा एकता ही होगी यह बात संभव नहीं। कभी होगी, कभी नहीं होगी किंतु हम 'सर्वपंथ समादर मंच' वालों का विश्वास है कि हिंदू–मुसलमान एक होंगे इसका कारण है। पहली बात कि हम हिंदू–मुसलमानों में यूनिटी नहीं चाहते क्योंकि हिंदू यदि एक यूनिट है, तो मुसलमान दूसरा। हमारे पूर्व के वक्ता ने कहा कि सहिष्णुता रहनी चाहिए, क्या गारंटी है कि सहिष्णुता रहेगी ही। सहिष्णुता न रखने से यदि मेरा लाभ होता है, तो मैं सहिष्णुता क्यों रखूँ ? यदि अलग–अलग दो यूनिट हैं तो दोनों में एकता

होनी चाहिए। दोनों में सहिष्णुता होनी ही चाहिए ये आप जैसे 'सरमन' देते हैं, सरमन देते जाइए, पर हमेशा ऐसा होगा नहीं। हम हिंदू–मुस्लिम यूनिटी नहीं चाहते हैं। हम समझते हैं कि हिंदू मुस्लिम इज वन सोसाइटी। दोनों में अंतर समझ लीजिए। यूनिटी का मतलब होता है कि दो यूनिट है। हमारा कहना कि दो यूनिट नहीं हैं, एक ही यूनिट है। और, एक ही के बीच में झगड़े हैं। जैसे मुसलमानों में झगड़े हैं, हिंदुओं में झगड़े हैं वैसे हिंदू–मुसलमान झगड़े भी हो सकते हैं। यूनिट एक है इसलिए हम यूनिटी नहीं चाहते। 'वन्नेस' है। हम चाहते नहीं है–– वह वस्तु स्थिति है। It is already there.

लेकिन राजनेता लोगों ने अपने स्वार्थ के कारण झगड़े लगाए। केवल हिंदू–मुसलमान में ही झगड़ा नहीं है। बैकवर्ड–फॉरवर्ड में भी है। दलित सवर्ण यें भी है। तरह–तरह के झगड़े ये राजनेता अपने स्वार्थ के लिए, अपनी गद्दी के लिए लगाते हैं। यह उसी का एक पार्ट है ––It is part of whole. It is not a separate question. एक बड़े गहन विषय का यह छोटा हिस्सा है । यह स्वतंत्र और अलग प्रश्न नहीं है । जब संपूर्ण समाज एक है तो 'Not the unity but oneness' एकता नहीं अपितु एकरसता, एकात्मकता यह सर्वपंथ समादर मंच की भूमिका कृपया आप समझ लीजिए।

स्वराज प्राप्ति के बाद

दूसरी बात–मतभेद। राजनेता मतभेद खड़े करते हैं ये अलग बात है। मुझे इस संबंध में एक घटना याद आती है–१२ साल पहले लखनऊ में एक सेमिनार था–जस्टिस मुर्तजा अध्यक्ष थे, मैं वक्ता था। विषय था–माइनॉरिटी एजुकेशन एंड इट्स इन्सटीच्युशंस। वह विषय आप सबको पता है, इस पर चर्चा है कि आर्टिकल 29, आर्टिकल 30, आर्टिकल 31 के कारण माइनॉरीटी एजुकेसन्स वगैरह–वगै....। सारी बातें आप लोग जानते ही हैं, पूरा बताने की आवश्कता नहीं। पहले हमारा भाषण हुआ। बाद में मुर्तजा हुसैन बोलने के लिए खड़े हुए, उन्होंने सीधे मेरी तरफ देखकर कहा कि मि. ठेंगडी आपके बोलने का यह मतलब दिखता है कि यहाँ का मुसलमान राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल नहीं है। यदि आपका ये कहना है तो मैं आपको काउंटर क्वेश्चन प्रति प्रश्न करना चाहता हूँ कि वे इसमें शामिल क्यों नहीं हैं ये बताइए। Who is responsible for it. इसके लिये कौन जिम्मेदार है ? फिर उन्होंने कहा कि मुझे ठीक–ठीक स्मरण है मैं जब बच्चा था, गाँव में था। हमारे गाँव में कोई हिंदू–मुसलमान समस्या नहीं थी। हमारे मुहर्रम में हिंदू शामिल होते थे। होली–दीपावली में हम शामिल होते थे। मैं शहर आया कालेज पढ़ाई के लिए तो मैं झुग्गी–झोपड़ी में रहता था। गरीब था, वहाँ कोई हिंदू–मुसलमान समस्या हमने देखी नहीं।

स्वराज प्राप्ति के बाद में ये जो हिंदू–मुस्लिम समस्याएँ इतनी आ रही हैं। इसका क्या कारण है ? और, आज की परिस्थिति में मुसलमानों में मुख्य प्रवाह के साथ एकात्म होना चाहिए ये कहने का मि० ठेंगड़ी आपको नैतिक अधिकार है क्या ? Have you got moral right to say that Muslim should be one with the national mainstream? एक कारण बताता हूँ–हम मुसलमान यहाँ बैठे हैं। हमारे पास अलग अलग राजनीतिक दल के हिंदू नेता आते हैं। फिर हमको बताते हैं कि देखो ये बहुजन समाज आपको खा डालेगा। आपको हमारी पार्टी ही बचा सकती है। हमें वोट दीजिए। एक पार्टी कहती है कि हम आपको तीस 'प्रीविलेजेज' देते हैं, दूसरे पॉलिटिकल पार्टी के हिंदू नेता आकर कहते हैं कि हमारी पार्टी आपको पचास प्रीविलेजेज देती है। क्या आपका कहना है कि जब पावर हंगरी हिंदू राजनीतिक नेता हमारे सामने खुले आम संघर्ष कर रहे हैं कि मुस्लिम वोट प्राप्त करने के लिए मुसलमानों को ज्यादा से ज्यादा प्रीविलेजेज कौन सी पार्टी देगी। आप हमारे सामने यह प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। और, हम कहें कि नहीं–नहीं हम तो भोले भाले हैं हम तो प्रीबिलेजेज नहीं चाहते; हम तो मुख्यधारा में शामिल हो जाएगें। काहे को शामिल होंगे। तो उनका वाक्य था कि आप यदि चाहते हैं कि मुस्लिम मुख्यधारा में आना चाहिए तो आप पहले सत्ता लोलुप राजनीतिक नेताओं को कान पकड़कर ठीक कीजिए। उन्होंने कहा कि पहले राजनीतिक नेताओं को मुख्यधारा में लाइए। ये नेता लोग स्वयं ही मुख्यधारा में नहीं हैं। मुसलमान हैं या नहीं, यह अलग सवाल है। जस्टिस मुर्तजा हुसैन का कहना था कि राजनीतिक नेता सत्ता लोलुप हैं। वे प्रधान मंत्री बनने के लिए देश तक को तोड़ने के लिए तैयार हो रहे हैं। राजनीतिक नेता जब ठीक हो जाएँगे तो मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि एक साल के अंदर–अंदर मुस्लिम राष्ट्रीय मुख्यधारा में शमिल हो जाएँगे। ये बारह साल पहले की बात है। लखनऊ में पब्लिक मीटिंग में ये सब हुआ।

सत्य की विजय

थोड़ी मानसिकता समझ लीजिए। What is Psychology ? और, इस दृष्टि से और कुछ बातें। प्रचार से ज्यादा दिन तक लोगों को गुमराह नहीं किया जा सकता। न सांप्रदायिक प्रचार से न ही सांप्रदायिकता विरोधी प्रचार से। जो–सत्य होगा उसी की विजय होगी। जो सत्य है, वो अपने पैरों पर खड़ा होता है। टी०वी०, रेडियो और समाचार पत्रों के पैरों पर सत्य खड़ा नहीं होता। हाँ, सत्य की विजय होने में समय लगेगा। लेकिन विजय सत्य की ही होगी।

सत्य क्या है ? जरा देखा जाए। हिंदू नाम का एक रिलिजन है तो बाकी रिलिजन के साथ हमेशा एकता होगी ये गलत बात है। फैक्ट ये है कि हिंदू नाम

का कोई रिलिजन है ही नहीं, और न कभी रहा होगा। अगर था तो कहाँ गया वो रिलिजन? हुआ यह कि यूरोपीयन्स आए। उन्होंने यहाँ देखा एक मुसलमान समाज है, कुछ ईसाई हैं बाकी हिंदू हैं। उन्होंने सोचा हिंदू कोई रिलिजन होगा क्योंकि यूरोप का बैकग्राऊंड था, इसलिए रिलिजन का अर्थ धर्म किया। जबकि धर्म अलग बात है, रिलिजन अलग। हम लोग भी रिलिजन का प्रयोग धर्म के नाते करते हैं और हिंदू धर्म, मुसलमान धर्म, ईसाई धर्म ऐसा कहते हैं। परंतु धर्म अलग–अलग नहीं हैं,रिलीजन्स अलग हैं। धर्म का केवल उपासना पद्धति से ही संबंध नहीं, जबकि रिलिजन का संबंध उपासना पद्धति से है। उससे भी ज्यादा–Religon is a relation between the man and its Maker. जो भी हो अल्टीमेट होगा। कोई उसको ब्रह्मा कहे, विष्णु कहे, अल्ला कहे, फादर कहे, याहोवा कहे। तो मनुष्य और अल्टीमेट इसके बीच में जो रिश्ता है वो रिलिजन है। इसलिए बाबा साहेब डॉ० अंबेडकर ने कहा कि Religon is personal,Dharma is social. (पंथ व्यक्तिगत है धर्म सार्वजनिक है) धर्म केवल उपासना पद्धति भर नहीं। धर्म धारण करने वाली चीज है। व्यक्ति–जीवन को धारण करने वाला व्यक्ति धर्म, परिवार जीवन को धारण करने वाला परिवार धर्म, सामाजिक,–राष्ट्रीय जीवन को धारण करने वाला राष्ट्रीय धर्म, मानव जीवन धारण करने वाला मानव धर्म। विश्व की धारणा करने वाला विश्व धर्म एक ही है सबके लिए। और, गलती से उसे यदि हिंदू धर्म कहा गया, इसका कारण यह नहीं कि इसे हिंदुओं ने बनाया। धर्म एक ही है–सृष्टि का धर्म। जैसे गुरुत्वाकर्षण (ग्रैविटेशन) धर्म है। किंतु पश्चिम में उसका सर्वप्रथम साक्षात्कार न्यूटन को हुआ। इसलिए उसको न्यूटन्स लॉ कहते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि न्यूटन के पहले यह नहीं था। वह सनातन है, चिरंतन है। लॉ ऑफ ग्रैविटेशन–गुरुत्वाकर्षण के प्राकृतिक नियम का साक्षात्कारी पुरुष पश्चिम में भले ही न्यूटन था परंतु हमारे यहाँ पहले ही इसका साक्षात्कार हो चुका था। जैसे लॉ ऑफ रिलेटिविटी सनातन है, चिरंतन है। पश्चिम में आइन्स्टीन ने पहले पहल उसका साक्षात्कार किया इसलिए लॉ ऑफ रिलेटिविटी को आइन्सटीन्स लॉ कहते हैं। किंतु यह आइन्स्टीन का बनाया हुआ नहीं है, उन्होंने केवल देखा। वैसे ही पहले पहल धर्म देखने वाले हिंदु थे इसलिए उसे हिंदू धर्म कहा गया। वो धर्म है, हिंदू–धर्म नहीं है। पहले देखने वाले हिंदू थे, यह ऐतिहासिक घटना है।

हिंदू नाम का रिलीजन नहीं

धर्म एक अलग चीज है--और रिलिजन अलग। और, हिंदू नाम का कौन सा रिलिजन है मैं चैलेंज देकर बताता हूँ कोई मुझे सिद्ध करे कि हिंदू नाम का कोई रिलिजन है। कौन है इसका प्रॉफेट ? इसका एक बुक कौन सा है ? वेदों को मानने वाले हों या वेदों को न मानने वाले बृहस्पति से लेकर चार्वाक तक;

मेटेरियलिस्टिक फिलॉसोफी मानने वालों ने कहा वेद वगैरह सब धूर्त लोगों ने बनाया है, हम नहीं मानते इसको। वे भी हिंदू हैं। आपस में झगड़ा करने वाले अलग अलग रिलिजन्स के हिंदू हैं। हिंदुओं का रिलिजन्स हैं वैष्णव है, शैव है, शाक्त है; आस्तिक है, नास्तिक है। नास्तिक भी हिंदू हैं। अलग–अलग रिलिजन थे हिंदुओं के। हिंदू नाम का कोई रिलिजन नहीं है। जैसे, किराना माल की दुकान पर आप साइन बोर्ड देखते हैं। इस दुकान में सौ चीजें मिलती हैं, दौ सौ चीजें मिलती हैं, पाँच सौ चीजें मिलती हैं। किंतु यदि आप 100 रु० का नोट देकर कहेंगे कि भई 'किराना' नाम की चीज दीजिए। तो दुकानदार दे सकता है क्या ? क्योंकि किराना नाम की कोई चीज नहीं है, किराना एक अंब्रेला नाम है। उस छाता के अंदर सौ, दो सौ, पाँच सौ चीजें आ सकती हैं। वैसे ही हिंदू नाम का कोई रिलिजन नहीं है, किंतु उसमें सभी समायोजन होते हैं, यह किसी संघ के स्वयंसेवक ने नहीं, बल्कि महात्मा गांधी ने कहा है कि हिंदू के अंतर्गत इस्लाम क्रिश्चियनिटी, ज्युडाइज़्म आसानी से समायोजित हो सकते हैं यदि ठीक ढंग से समझ लिया तो। महात्मा गांधी ने ऐसा क्यों कहा होगा ? कारण स्पष्ट है कि हिंदू नाम का रिलिजन नहीं है। और, जैसे विभिन्न रिलिजन्स के हिंदू एक दूसरे से समायोजित होते हैं, वैसे ही इस्लाम, क्रिश्चियन, यहोवा भी एकॉमोडेट हो सकते हैं; ऐसा गाँधी जी का विश्वास था।

हिंदू दृष्टिकोण

लेकिन जहाँ हिंदू रिलिजन नहीं वहाँ रिलिजन के बारे में हिंदुओं का एक दृष्टिकोण है–Hindu view of Religion. वह दृष्टिकोण क्या है ? तो, जैसे कोई यदि यह कहता है कि सालवेशन कैन वी हैड थ्रू लार्ड 'विष्णु' एलोन यह हिंदू स्पिरिट नहीं है। किंतु यदि यह कहता है कि थ्रू लार्ड विष्णु ऑलसो। मोक्ष प्राप्ति केवल विष्णु के द्वारा ही, ये हिंदू स्पिरिट नहीं है; विष्णु के द्वारा भी, शिव के द्वारा भी, दुर्गा के द्वारा भी ये हिंदू स्पिरिट है। दुर्गा के द्वारा ही–ये हिंदू स्पिरिट नहीं है। वैसे कोई यदि कहता है कि सालवेशन कैन बी हेड थ्रू मुहम्मद प्रोफेट अलोन नॉन हिंदू है। किंतु वही यदि कहता है कि सालवेशन कैन बी हेड थ्रू मोहम्मद प्रॉफेट आलसो–हंडरेड परसेंट हिंदू है। थ्रू जीसस क्राइस्ट एलोन– नॉट हिंदू। थ्रू जीसस क्राइस्ट ऑलसो परफेक्टली हिंदू। ये थोड़ी समझ लेने की बात है। आज के राजनेताओं के जो भाषण हैं बिलकुल गैर जिम्मेदाराना होते है। गैर जिम्मेवार राजनेता, बेईमान राजनेता, प्राइम मिनिस्टर बनने के लिए जनता को गुमराह करते हैं। देश के टुकड़े करने वाले, समाज के टुकड़े करने वाले राजनेताओं को आप प्रमाण मत मानिए ! सत्य क्या है इसको जरा देखिए। तो, इस दृष्टि से हिंदू वे ऑफ रिलिजन है। और, इस दृष्टि से दो रिलिजन में एकता हो, ये मैं नहीं कहता

क्योंकि हिंदू नाम का रिलिजन है ही नहीं और, यदि कोई रिलिजन हो तो उनमें एकता ही होगी ये गारंटी आप दे नहीं सकते।

मतभेद स्वाभाविक

दूसरी बात देखिए। आपने ठीक बात कही कि भई मतभेद है। अब राजनेता तो जानबूझकर भेदों को उभारते हैं। किंतु वैसे भी मतभेद होते ही हैं। कहां नहीं होते हैं, परिवार में भी मतभेद होते हैं। अब पांडवों के जैसा कोई परिवार था। किंतु वहाँ भी मतभेद हुए क्योंकि परिवार में अलग–अलग लोग है उनकी अलग–अलग प्रवृत्ति हैं अलग–अलग मानसिक पृष्ठभूमि है, और इसलिए एक ही घटना पर अलग–अलग प्रतिक्रियाऐं हो सकती हैं। द्रौपदी वस्त्र हरण का प्रसंग था। भीम ने कहा कि मैं दु:शासन को पीटता हूँ। युधिष्ठिर ने कहा कि चुपचाप बैठो। भीम ने कहा कि सहदेव थोड़ा अग्नि लाओ, मैं अपने युधिष्ठिर दादा के हाथ जलाना चाहता हूँ। इससे ज्यादा और मतभेद क्या हो सकते हैं ? क्या इसी के कारण एकदम दो गुट हो गए ? फैक्सनलीज्म हो गया है ऐसा नहीं कहा जा सकता। परिवार में भी अलग अलग टेंपरामेंट हैं, अलग–अलग टेंडेंसी हैं अलग–अलग मेंटल बैकग्राऊंड है, इसके अनुसार अलग–अलग रिएक्शन्स होंगे ही। परिवार की भावना यह इतनी बलवान है कि सभी मतभेदों को समेटकर परिवार एक हैं। इसलिए पांडवों का परिवार एक रहा।

ध्येय, एक होते हुये भी सबकी भावना एक होते हुए भी इंफैसिस (दबाब, जोर) में फर्क हो सकता है। जैसे कि किसी के घर में लड़की है। विवाह योग्य हो गई है सभी परिवार वालों की इच्छा है कि अच्छे घर में इसका विवाह होना चाहिए ताकि इसका जीवन सुखी हो और, इसकी शादी अच्छे ढंग से होना चाहिए, ताकि गाँव वाले कह सके कि शादी बहुत अच्छी हुई। लेकिन सबकी इच्छा है। सबका मत एक ही रहेगा क्या ? अनुभव के आधार पर हमारे पूर्वजों ने कहा–'नहीं प्रायोरिटीज अलग अलग होती है। अपने विवाह के बारे में लड़की सोचती है कि लड़का स्वरूपवान है कि नहीं, लड़का हैंडसम है कि नहीं ? माने बांकी चीजें उसके सामने नहीं रहती ऐसा नहीं। लेकिन जो उसके सामने प्राथमिकता है कि लड़का स्वरूपवान है कि नहीं ? माता का ऐसा नहीं है, माता भी चाहेगी कि स्वरूपवान होना चाहिये। लेकिन, माता की प्राथमिकता रहती है कि परिवार की आर्थिक आमदनी कैसी है। कहीं ऐसा न हो कि वहां शादी होने के बाद सारा जीवन दूसरों के यहां बर्तन मांजने और कपड़े धोने में बिताना पड़े। पिताजी उससे भी प्रसन्न नहीं हैं। वे कहते है कि आज तो परिवार समृद्ध होगा लेकिन कल यदि अर्थव्यवस्था टूट जाती है, गरीब हो जाता है तो क्या इस लड़के में ये ताकत है कि सारी सम्पत्ति खोने के बाद फिर से अपने कर्तृत्व के आधार पर वह अपने परिवार को उपर ला

सकता है। तो—एजुकेशनल क्वालीफिकेशन उसका क्या है यह पिता की प्राथमिकता रहती है। याने बाकी बातें वो मानता नहीं ऐसा नहीं है। वह भी चाहेगा कि लड़का स्वरुप में अच्छा हो। आज की फाइनेन्सियल पोजिशन अच्छी हो, लेकिन इससे पिता संतुष्ट नहीं। तो लड़के के अंदर एक बार गिरने के बाद फिर से उठकर खड़ा होने की ताकत है कि नहीं यह पिता देखता है। अब बाकी जो रिश्तेदार हैं उन्हें इतने गहराई में जाने के लिये उनकी इच्छा भी नहीं और टाइम भी नहीं है। वे केवल चाहते हैं कि हमारे बराबरी का खानदान हो, बाकी सब चल जायगा। आप और हम भी तो लड़की के विवाह में सहानुभूति रखते हैं। किंतु हम क्या चाहते है ? तो कहा गया है कि 'मिष्टान्नं इतरे जनाः'। जलेबी कैसी हो इसकी। लड्डू कैसा था। हमारा कन्सीडरेशन इतना ही है —

कन्या वरयते रुपम् माता वित्तं पिताश्रृतम्
बांधवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नं ईतरें जनाः।

(कन्या रुप चाहती है, तो माता धन, पिता ज्ञान, वांधव कुल, तो अन्य लोग मीठा भोजन चाहते हैं)

तो सारे लड़की का अच्छा चाहते है, लड़की की भलाई चाहते हैं। लेकिन हरेक की प्राथमिकता अलग अलग है तो इसके कारण एकदम यह समझना कि मतभेद हो गये है ऐसा नहीं है। मतभेद अलग बात है। मनभेद अलग बात है ।

जहां तक मतभेद का सवाल है तो परिवार का क्या आप में से कई लोगों ने अनुभव किया होगा कि खुद का खुद के साथ भी मतभेद होता है। आप जरा अपने अपने जीवन का विचार किजिए, खुद का खुद के साथ भी मतभेद होता है।

हमारे एक नेता मित्र थे। उनको डायबीटिज था। परहेज नहीं करते थे। डायबीटिज बढ़ने लगा। आखिर डॉक्टर ने उन्हें कहा कि देखो अब मैं वार्निंग देता हूँ। अभी यदि पथ्य का पालन नहीं किया तो आप मर जाओगे। स्पष्ट कहा। तो थोड़ा सा असर हुआ। फिर नेता ने तय किया अब मीठा नहीं खाना चाहिये। एक दिन वे प्रवास में जा रहे थे। मैं अपने प्रवास में जा रहा था। संयोग से मैं उनके डब्बे में चला गया आगे हम दोनों को दूर तक जाना था। बीच में एक स्टेशन पर उनके कुछ लोग उनका सम्मान करने के लिये आये थे। हार वगैरह साथ में लाए थे।

नेता नाराज हो गया और कहा—तुमने पुष्प हार लाया उपहार नहीं लाया?

एक बोला 'नहीं सा'ब उपहार नहीं लाया'।

फिर एक पुराने कार्यकर्ता ने उनके हाथ में एक डिब्बा दिया।

नेता ने पूछा क्या है ? तो कार्यकर्ता ने कहा 'ये बर्फी का डब्बा है'।

नेता बोले — 'बर्फी का डब्बा है' ? "तुम मेरे दुश्मन हो, मुझे मारना चाहते हो ? डाक्टर ने कहा है कि मैं यदि मीठा खाऊँगा तो मर जाऊँगा। तुम चाहते हो कि मुझे मरना चाहिए"।

वह कार्यकर्ता नेता का स्वभाव जानता था उसने सब सुन लिया और फिर कहा कि जी नहीं , आप जानते नहीं। ये बर्फी की एकदम नयी वेराइटी है। ऐसी बर्फी आपने कभी जीवन में खायी नहीं होगी।

"अच्छा नई वेराइटी है फिर मेरे बिस्तर पर रख दो"। उसने बर्फी बिस्तर पर रख दी।

अब गाड़ी आगे चलने लगी। मुझे भी लालच हो गया कि भई ये डिब्बा है, तो कम से कम बर्फी की एक दो पिसेस मुझे भी मिलेगी। आपको आश्चर्य होगा एक भी पीस मुझे नहीं मिला। इसका मतलब क्या है ! कि खुद का खुद के साथ मतभेद हो सकता है। पहले बर्फी नहीं खायेंगे। फिर नयी वेरायटी है, "ठीक है"। चुपके से यदि खा लेंगे, दवा ले लेंगे। बाद में इंसुलिन के चार इंजेक्शन लेंगे। आपत्ति क्या है ? तो खुद का खुद के साथ भी मतभेद हो सकता है। तो इसमें ये समझना कि मतभेद हो गया, झगड़े हो गये ऐसा समझना उचित नहीं।

और इस दृष्टि से मान लीजिए यहाँ कोई मुसलमान नहीं। सारे हिन्दू हैं तो हमेशा एक ही मत रहेगा क्या ? हर विषय पर अलग–अलग मत होते हैं। वे कहते हैं कि ऐसी पार्टी होनी चाहिये जिसमें कोई मतभेद नहीं हो। मैंने कहा कि कैसे होगा ? हमारा प्लुरलिस्टिक—बहुआयामी समाज है। रिलिजन की बात छोड़िये। उदाहरण के लिए समझिए कि एक ही राजनीतिक दल है। मान लीजिए उस दल के मीटिंग में प्रश्न उठता है कि चंडीगढ़ कहाँ जाना चहिये। हरियाणा या पंजाब, किसमें जाना चाहिए ! सौ लोगों ने कहा कि पंजाब को देना चाहिये। ऑल राइट ये सौ लोगों का एक गुट हो गया। अगला सवाल आया कि एजुकेशनल सिस्टम में १०+२+३ यें कायम रहे या उसको खत्म किया जाय। आप क्या समझते है कि चंडीगढ़ को पंजाब में देना चाहिये ऐसा कहने वाले सौ लोगों का ग्रुप १०+२+३ के बारे में एक ही ग्रुप में रहेगा। उसमें से कुछ कहेगा ये रहना चाहिये कुछ कहेगा ये नहीं रहना चाहिये। मान लिजिए एक ग्रुप कहता है कि १०+२+३ खत्म होना चाहिए जिसमें सौ लोग हैं। फिर सवाल आया कि टैक्सेशन में डायरेक्ट टैक्सेशन ज्यादा रहें या इनडायरेक्ट टैक्सेशन ज्यादा रहे ? आप क्या समझते हैं कि जो कह रहे हैं कि १०+२+३ खत्म होने चाहिये ऐसे सौ लोग टैक्सेशन के सवाल पर एक ही ग्रुप में रहेंगे ? उसमें से कुछ कहेंगे डायरेक्ट कुछ कहेंगे इनडायरेक्ट टैक्सेशन।

और मान लीजिए सौ लोग कहते हैं इनडायरेक्ट टैक्सेशन नहीं होना चाहिये। क्या वे सारे लोग यदि राम जन्म भूमि का सवाल आया तो सब एक ही ग्रुप में रहेंगे ? कोई कहेंगे होनी चाहिये। कोई कहेंगे नहीं होना चाहिये। हमारा प्लुरलिस्टिक समाज है। और बहुआयामी समाज में सोचना कि मतभेद नहीं होना चाहिये। यह गलत है। मतलब है कि we are quarrelling with the facts. असलियत ही ऐसी है, वो केवल रिलिजन के कारण नहीं है। समाज ही प्लुरलिस्टिक है।

तो प्रश्न को ठीक ढंग से समझने की आवश्यकता है और इसलिये इसको केवल हिन्दू–मुस्लिम प्रश्न के रुप में देखना उचित नहीं है। हमारी बात वननेस एकरसता, एकात्मकता की है। आप जरा दोनों में अंतर समझ लीजिए। Whole society is one. We don't want society to unite. इसलिये हम सहिष्णुता शंब्द को पसंद नहीं करते। क्यों सहिष्णुता ? इसलिये हमने समभाव शब्द भी नहीं लिया। हमने कहा समादर। दोनों में अंतर है। समभाव में समता है, समादर में हम समझते है कि आदर की भावना से हम दूसरे को देखते हैं। हमारी शब्दावली देखिये। टर्मिनोलॉजी इज़ वेरी इम्पॉर्टेन्ट। शब्दावली का अतीव महत्व है। दूसरी बात यह है कि हमें आज की परिभाषा में बोलना है। हमारी टर्मिनोलॉजी हमारी भावना हमने बताई ।

किंतु आज जो घोर सांप्रदायिक है और जो जाति सांप्रदायिकता फैला रहे हैं, वे ही कह रहे हैं कि हिंदू–मुस्लिम युनिटी हो। जो दलित सांप्रदायिकता फैला रहे हैं वे ही कह रहे हैं हिंदू–मुस्लिम युनिटी हो। सांप्रदायिकता नष्ट हो। ये डेमोनिंग है, ऐसा नहीं होना चाहिए। यदि हमें वास्तव में सोचना है तो, इसके लिये केवल ऊपर से उसके पत्ते काटने से विषय बृक्ष नष्ट नहीं होता। विषय बृक्ष की जड़ कहाँ है यह हमें देखना पड़ेगा। जड़ से उखाड़ना पड़ेगा। तो जड़ कहाँ है ? इसका स्टडी जबतक नहीं होता, अध्ययन नहीं होता, तब तक इस विष बेल को नष्ट नहीं किया जा सकता है। तो संक्षेप में हम थोड़ा देखें कि इसकी जड़ कहाँ है ?

विष बेल की जड़ कहाँ है ?

पुरानी जड़ है। उसको जब तक नहीं समझते तब तक केवल पत्ते काटने से और भाषण देने से काम नहीं होगा। कहाँ से डेविएशन शुरु हुआ है। ये जानना चाहिये। संक्षेप में मैं बताना चाहता हूँ। पहले यहां जो स्वराज्य था। 1818 में पूणे में जो पेशवाओं का हेडक्वॉटर था, शानवार बाड़ा पर जो भगवाध्वज लहरा रहा था उसको नीचे लाया गया। अंग्रेजों का यूनियन जैक वहॉ लहराया गया । कुछ क्षण हमारे स्वराज्य की समाप्ति हुई। अंग्रेजों का शासन शुरू हुआ। तो वो क्षण कि भगवा ध्वज स्वराज्य का नीचे उतारा गया। अंग्रेजी साम्राज्य का यूनियन जैक् ऊपर चढ़ाया गया। उसका थोड़ा यदि विचार करेंगे तो ध्यान में आयेगा कि अंग्रेजों की

नीति क्या थी। ये काम किसने किया ? किसी अंग्रेज ने नहीं किया। अंग्रेजों के कहने पर एक हिन्दू ने, इतना ही नहीं, पेशवा के जाति वाले एक हिन्दू ने जिसका नाम था बाला जी पन्त नातू। पेशवा के जाति का था। उसने भगवे ध्वज को नीचे उतारा। उसने यूनियन जैक को लहराया। विचार कीजिए कि अंग्रेजों की नीति क्या थी ?

दूसरा बिन्दु लीजिए। कहा जाता है कि मुस्लिम कम्युनलीज्म के पहले शानयाने–सर सैयद अहमद थे। प्रारंभ से ऐसा था क्या ? सर सैयद अहमद के पहले भाषण रहे हैं कि हिन्दू और मुसलमान एक ही शरीर के दो आँखे हैं। एक ही देश का शरीर है। उसकी दो आँखें हिन्दू और मुसलमान है। कोई भी आँख यदि घायल हो जाती है तो दूसरी आँख को धक्का लगेगा ही। ये भाषण देने वाले सर सैय्यद अहमद थे। उनका संपर्क हो गया अंग्रेजों के साथ। भाषा बदल गई। ये ध्यान में रखिये। किंतु दोनों के बीच में जो प्वाइंट है, वह 1818 शनिवार वाड़ा इधर सर सैयद अहमद, इसके बीच में जो है वह ध्यान में रखने लायक है।

1818 के बाद और 1857 के पूर्व स्वातंत्र्य संग्राम ऐसा नहीं कहा जा सकता। छिट–पुट लड़ाइयाँ, अलग–अलग जातियों ने अलग टाइम में अंग्रेजों के खिलाफ की होगी। बेशक स्वातंत्र्य संग्राम 1857 का था। अंग्रेजों ने दुनियाँ में इसको मिसइंटरप्रेट किया। हिन्दुस्तान में किया। और अंग्रेजों की मानसिक गुलामी करने वाले अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों ने अंग्रेजों की टर्मिनोलॉजी स्वीकार की और कहा कि यह सिपाही लोगों का विद्रोह था। यह सिपाही लोगों का विद्रोह नहीं था अपितु यह स्वातंत्र्य संग्राम था। सावरकर ने पहली बार एक किताब लिखकर सिद्ध किया कि 1857 का युद्ध भारत का स्वतंत्रता संग्राम था । सावरकर की किताब सरकार ने पब्लिश होने के पहले प्रेस्क्राइब की थी। उन्होंने स्पष्ट कहा कि ये स्वतंत्रता संग्राम ही था, सिपाही लोगों का यह विद्रोह नहीं था। 1857 के लड़ाई का स्वरूप क्या था ? इसमें नाना साहब पेशवा, सेनापति तात्या टोपे, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और तीनों ने घोषणा की थी कि बहादुरशाह जफर हिन्दुस्थान के बादशाह हैं। दिल्ली के बादशाह के नाते इन्होंने बहादुरशाह जफर के नाम की घोषणा की थी। जफर इन लोगों के साथ थे। अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने में बहादुरशाह जफर शामिल थे। लेकिन जब सारा मामला उल्टा होने लगा तो सावरकर जी ने अपने इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेस में लिखा है कि कोई एक उनसे सहानुभूति रखने वाले जफर के पास गये और कहा कि –

"दमदमे में दम नहीं अबखैर मांगो जान की ।
ऐ जफर ठंडी हुई शमशेर–हिंदूस्तान की"।

हिन्दुस्तान की शमशेर ठंडी हो गई अब अंग्रेजों के पास जाकर अपने

जान की खैर माँगिये। तो बहादुरशाह जफर ने जबाब दिया –

गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की ।
तब तो लंदन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की।।

उस समय ये राजनेता नहीं थे तथाकथित सेक्युलरिस्ट, बेईमान सेक्युलरिस्ट राजनेता उस समय नहीं थे। बहादुरशाह जफर ने कहा कि तब तो लंदन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की। यह वायुमंडल था।

स्वार्थी नेता लोग

सारे जहाँ से अच्छा के निर्माता मु० इकबाल का पूर्व वक्ता ने उल्लेख किया। आपको आश्चर्य होगा कि अंग्रेजों के डिवाइड एंड रूल पौलिसी के कारण भेद करो, झगड़े लगाओ, और शासन करो, इस नीति के कारण केवल मुसलमानों में नहीं, हर जाति में, हिंदू भी अलग अलग हो गये थे।

क्या आप समझते है कि आज की परिस्थिति में हम हिंदू हैं ऐसा कहना लाभदायक है। आज तो बिल्कुल नहीं। यहाँ तक कि कुछ साल पूर्व रामकृष्ण मिशन के लोगों ने भी कलकत्ता हाईकोर्ट के सामने आफिडेविट दिया था–हम तो हिन्दू नहीं, हम तो रामकृष्णाइट हैं। इसलिये हम माइनोरटी कम्यूनिटी हैं। कारण आज के संविधान में माइनोरटी बनने में हरेक को लाभ है । जहाँ रामकृष्ण मिशन के संयासी कहते है हम हिंदू नहीं, रामकृष्णाइट हैं । मुसलमानों ने कहा तो कौन सी बड़ी बात हो गयी । आज का कांस्टीच्यूशन ही ऐसा है जिसमें हिंदू न होना लाभदायक है । हिंदू होना गलत काम है । तो इस परिस्थिति में शुरु से डिवाइड एंड रुल पौलिसी चल रही थी, और कुछ मुसलमान ऐसा समझते थे कि भई अलग रहने से हमारी सौदे की ताकत रहेगी, 'बारगेनिंग पावर' रहेगी। हम एक हो जायेंगे तो हमारी पावर क्या रहेगी ? मुझे स्मरण होता है कि बाबा साहब अंबेडकर की मृत्यु के पश्चात जो रिपब्लिकन पार्टी वगैरह का चला तो हमारे बच्छराज जी व्यास का और मेरा सभी अंबेडकराइट्स के साथ अच्छा संबंध था। बच्छराज जी एक अंबेडकराइट नेता को परम पूजनीय गुरुजी के पास लेकर गये। गुरुजी ने कहा कि भई तुम्हारा सब कहना ठीक है। दलितों पर अन्याय हुआ उसका परिमार्जन होना चाहिये, उसके लिए क्या–क्या होना चाहिये आपने सब ठीक कहा लेकिन आप अलग पार्टी क्यों बना रहे हैं ? शिड्यूल कास्ट फेडेरेशन बनाकर किसी नेशनल पार्टी में शामिल होइये। किसी में भी शामिल हो जाइये। उस समय जनसंघ था। बोले 'आप जनसंघ में जाइये, कांग्रेस में जाइये, शोसलिस्ट पार्टी में जाइये, कम्युनिस्ट पार्टी में जाइये ये सब नेशनल पार्टी थे। किसी भी नेशनल पार्टी में जाकर आप यदि ये बात बोलेंगे तो नेशनल पार्टी होने के कारण इस बात का

प्रभाव ज्यादा होगा। आप नेशनल पार्टी में शामिल क्यों नहीं होते ? तो उस नेता ने स्पष्ट कहा गुरुजी आप हमको मूर्ख मत समझिये। आज हम शिड्यूल कास्ट फेडेरेशन बनाये हैं। हमारे 'शिड्यूल कास्ट' में एजुकेटेड लोगों की संख्या कम हैं। हम थोड़े एजुकेटेड लोग आसानी से नेतृत्व कर सकते हैं। हम नेशनल पार्टी में जाएंगे तो हमें कौन पूछेगा ? वहाँ क्वालिफीकेशन की दृष्टि से हमसे अधिक कई बड़े लोग हैं। हम तो पिछड़ा, बैक बेंचर बन जायेंगे। हमें यदि लीडर के नाते रहना है तो सेपरेट शिड्यूल कास्ट फेडरेशन रखना ही आवश्यक है।

ऐसा समझने वाले मुस्लिम लोग भी थे। किंतु समझदार मुस्लिम लोग राष्ट्रीय धारा में थे, राष्ट्रवादी थे । कांग्रेस में थे। कई लोगों को आश्चर्य होगा कि जिन्ना वाज़ ए स्टॉन्च नेशनलिस्ट। मु० इकवाल वाज ए स्टॉन्च नेशनलिस्ट। शौकत अली मो० अली वेअर नेशनलिस्ट। यहाँ तक कि अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन 1919 में हो रहा था, उसी समय छिंदवारा जेल में शौकत अली और मुहम्मद अली थे उनकी रिहाई भी हुई । कहीं इधर उधर न जाते हुए वे दोनों सीधे अमृतसर पहुँचे और सबके सामने शौकत अली मुहम्मद अली ने, उस समय लोकमान्य तिलक जो राष्ट्र नेता थे उनके चरण स्पर्श करते हुए वहाँ बैठ गये। ये शौकत अली मुहम्मद अली थे। बैरिस्टर जिन्ना तिलक जी के भक्त थे, राष्ट्र नेताओं में उनकी गिनती थी। जिस समय लाला लाजपत राय अमेरिका छोड़कर फॉर द फर्स्ट टाइम अमरीका से आये, मुम्बई बंदरगाह पर उनका स्वागत करना था। कांग्रेस ने अपने ओर से तीन आदमी को डिपुट किया था । एक थे लोकमान्य तिलक, दूसरे थे डॉ० एनी बेसैंट, तीसरे थे बैरिस्टर जिन्ना। इससे आपको कल्पना आयेगी । सर्वप्रथम सेपरेट इलेक्टोरेट की जब बात की गई तब बैरिस्टर जिन्ना ने जगह जगह मुसलमानों की सभाएं लेकर उन्हें समझाया कि सेपरेट इलेक्टोरेट गलत है। आज लोग ये विचार जानते नहीं। इसी कारण इसका बीज कहाँ है, जड़ कहाँ है ये नहीं जानते। ये मु० इकबाल की एवं बाकी राष्ट्रीय मुसलमानों की प्रवृत्ति थी।

अंग्रेजों द्वारा बीजारोपण

अंग्रेजों ने चाल चली। उन्होंने कहा कि हिंदू मुसलमान यदि एक हो जायेंगे तो हम उन्हें स्वराज देकर चले जायेंगे । अब रणनीति में उसको जबाब देना था। लोक मान्य तिलक उस समय राष्ट्र नेता थे। लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में १९१६ में वहाँ उन्होंने हिन्दु–मुस्लिम पैक्ट किया। लेकिन मुसलमान के प्रतिनिधि के नाते फिरंगी ने किसको रिकागनाइज्ड किया। वो राष्ट्रवादी थे। कांग्रेस के अनुकूल थे कांग्रेस में थे। उनको प्रतिनिधि के नाते मान्यता दी। ये तो केवल जबाब देना था। वे लोग अंग्रेजों को जानते थे कि केवल पैक्ट होने से अंग्रेज जाने वाले नहीं।

तिलक जी के मृत्यु के बाद एक नया युग शुरु हुआ जिसको गांधी युग कहते

हैं। प्रारंभ से ही पहले की जो पॉलिसी थी उसको छोड़कर दूसरी पॉलिशी शुरु हुई। सबसे पहले खिलाफत मुवमेंट के बारे में। बैरिस्टर जिन्ना ने पब्लिकली गांधी जी को कहा था कि आप खिलाफत मुवमेंट के बारे में मुहिम में हैं, खिलाफत मुवमेंट को सपोर्ट करेंगे। लेकिन इसके कारण मुसलमान कांग्रेस में आयेंगे आप ऐसा समझते हैं तो ऐसा नहीं है । और एक्चुअली हुआ यही। तुर्किस्तान में खिलाफत मुवमेंट को किसी संघ वालों ने एबोलिश नहीं किया न किसी आर०एस०एस० वालों ने। मुस्तफा कमाल पाशा ने खिलाफत को एबोलिश किया। वहां के लोग डिपुटेशन लेकर गये उन्होंने कहा कि ये आऊट डेटेड एजेन्सी है, इसको मैं नहीं रहने दूंगा। तुर्कीस्तान के मुसलमानों ने मान लिया। तुर्कीस्तान के शासक मुस्तफा कमाल पाशा ने मान लिया। इधर हिन्दू खिलाफत कब पुनर्जीवित हो इसके लिये पैसा दे रहे, आन्दोलन कर रहे, खिलाफत के उत्थापन के लिये जेल जा रहे और तुर्कीस्तान के मुसलमान ने नहीं, यहां के मुसलमान डेपुटेशन लेकर गये और कमाल पाशा को कहा–साहब खिलाफत का पुनर्जीवन होने दें। कमाल पाशा बोले मेरे तुर्कीस्तान में नहीं होगा। अब यहां के मुसलमान यहां के हिन्दूओं को लेकर गये थे। उन्होंने सोचा यहाँ हिन्दूओं के जैसे ये भी लालच में आ जायेंगे, तो उन्होंने कहा कि आप हमारा मोटिभ नहीं समझे। हम चाहते हैं कि खिलाफत का पुनर्जीवन हो और हम आपको ही दुनिया का खलीफा घोषित कर दें। इसी प्रकार आप तुर्कीस्तान के सुलतान भी रहेंगे और दुनियाँ के खलीफा भी हो जायेंगे। उन्होंने कहा कि ये मैं कुछ नहीं चाहता। सिद्धान्त के नाते मैं खिलाफत का विरोधी हूँ। वहाँ विरोध ! और यहाँ, भारत में, गांधी जी के कहने पर खिलाफत का पुनर्जीवन हो इस माँग के लिए हिंदू जेल में जा रहे थे। बैरिस्टर जिन्ना ने इसके खिलाफ बोला, माना नहीं । तो जो कांग्रेस को, राष्ट्रीयता को गाली देगा, लात मारेगा, उसके सामने झुकने का नया युग 1920 के बाद शुरू हुआ।

कांग्रेस की गलत नीतियाँ

मोपला विद्रोह राइट हुआ। जिन्ना ने कहा कि अब मोपला विद्रोह का निषेध करना चाहिये क्योंकि वह स्पष्ट रूप से हिन्दूओं के विरोध में था। लेकिन गांधी जी ने उनका स्वागत किया। सारा एक के बाद एंक हो रहा ऐसा दिखाई दिया। जो मुसलमान नेता कांग्रेस में राष्ट्रीय मुख्य प्रवाह में थे, उनको लगा कि जो लात मारेगा उसके सामने झुकना और हम यदि कांग्रेस के साथ हैं, राष्ट्रीय मुख्य प्रवाह में हैं तो "We are taken for granted"। घर की मुर्गी दाल बराबर ऐसा हमारे बारे में सोचा जाता है। यदि हम भी उनको गाली देना शुरू करेंगे तो ये हमारे सामने झुकेंगे। हमारे दाढ़ी को हाथ लगाएंगे। ऐसा जब बहुत साल चला तब जिन्ना है, मु० इकबाल है। नहीं तो सब को आश्चर्य होता है, कि एक समय कहने

वाला "सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा" उसी ने पाकिस्तान की संकल्पना क्यों दी होगी ? उसका कारण है कि कांग्रेस की नीति ही ऐसी थी जो लात मारेंगे उनके सामने झुकना।

और फिर मुसलमानों के साथ डायरेक्टली कांटेक्ट न करते हुए ये जो सौदेबाजी करने वाले लोग बीच में थे उनके साथ केवल सौदे की बात करना, ये कांग्रेस ने अपनी नीति चलाई। राउन्ड टेबल के पश्चात जो कम्युनल एवार्ड आया, कम्युनल एवार्ड स्पष्ट रूप से देश को तोड़ने वाला था। कम्युनल एवार्ड में ही पाकिस्तान का बीजारोपण है। लोगों ने कहा कि इसका विरोध करें। गांधी जी ने और कांग्रेस ने कहा कि विरोध करेंगे तो मुसलमान नाराज हो जायेंगे। किंतु स्वीकार भी नहीं कर सकते। क्योंकि इतना स्पष्ट था कि यह देश विरोधी है। स्वीकार भी नहीं और विरोध भी नहीं। इसके कारण ऐसी विचित्र भूमिका ली। बहुत लोगों को यह भूमिका मालूम नहीं कि कम्युनल एवार्ड के बारे में उसके बाद आने वाले चुनाव के समय कांग्रेस की भूमिका थी। 'We neither accept nor reject Communal Award'. हम कॉम्युनल एवार्ड का स्वीकार भी नहीं करते, अस्वीकार भी नहीं करते। लोगों ने कहा ये कैसे हो सकता है ? चोर मकान में आता है। हम कहते हैं कि चोर के बारे में भूमिका क्या है ? आप कहते हैं हम उसका स्वागत भी नहीं करते, वह बाहर जाय ऐसा भी नहीं कहते। ये कोई नीति हो सकती है। 'Either accept or reject ' (स्वीकार करो या विरोध करो) । एक्सेप्ट करना संभव नहीं था क्योंकि स्पष्ट रूप से वह राष्ट्र विरोधी था और रिजेक्ट करने की हिम्मत नहीं थी। क्योंकि मुस्लिम वोट्स थी। इस भूमिका में चुनाव होने थे।

चुनाव होने के बाद एक घटना हुई। छोटी सी घटना जो इतिहास बारीकी से पढ़ेंगे उनको ये बात ध्यान में आयेगी। जिसके कारण पं. जवाहर लाल नेहरु जैसे व्यक्ति को भी सत्य का साक्षात्कार कुछ समय में हुआ। क्या हुआ था। कम्युनल एवार्ड के चुनाव के समय मुस्लिम लीग को बहुत कम वोट मिला। कम जगह उनको सत्ता मिली। कांग्रेस ज्यादा आ गयी । ऐसे समय में यू०पी० में घटना ऐसी हुई कि यू०पी० के कांग्रेस नेताओं ने मुस्लिम लीग यू० पी० जो थी उनके साथ समझौता किया था कि भई आपका और हमारा यूनाइटेड फ्रंट नहीं हो सकता । आप भी खड़े कीजिए हम भी खड़े करेंगे। किंतु एक करें कि जो हमारे महत्व की सीटे है जहां हमारे अच्छे नेता खड़े है वहां मुस्लिम लीग का कमजोर कैन्डिडेट खड़ा कीजिए ताकि हमारा नेता चुनकर आ जाय। तो उन्होंने वो माना और उनके अच्छे–2 लोग चुनकर आ गये कांग्रेस के चुनकर आने के बाद फिर यहीं से कांग्रेसी नेता मुकर गये। उन्होंने कहा था कि ऐसा यदि आप करेंगे तो हम आपके एक दो लोग मंत्रीमंडल में लेंगे, केबिनेट में लेंगे। लेकिन जब कांग्रेस की स्पष्ट मेजोरिटी आ गयी, तो वो मुकर गये और उन्होंने वो मानने से इन्कार किया। फिर मुस्लिम

लीग ने घोषणा की कि हमारे साथ जो सेकरेट एग्रीमेंट था, अब ये मुकर रहे हैं, ये विश्वासघात किये हैं। और फिर जिन्ना ने, बगैरह लोंगो ने इतना जोरदार प्रचार किया कि अगले इलेक्शन में मुस्लिम लीग की मेजोरिटी कई प्रदेशों में आ गयी।

साक्षात्कार

कभी न कभी साक्षात्कार हो जाता है । उस समय जवाहर लाल जी को साक्षात्कार हुआ था। नवम्बर 1937 में उनका एक बहुत महत्वपूर्ण स्टेटमेंट आया था। कांग्रेस सेशन में भी उसकी चर्चा हुई, देश भर में भी उसकी चर्चा हुई। उनका स्टेटमेंट यह था कि मुसलमानों के बारे में कांग्रेस ने अभी तक जो नीति अपनायी वह गलत थी। हमलोगों ने, जो मुसलमानों को हिन्दूओं से अलग रखने में ही अपना राजनीतिक स्वार्थ मानते हैं, ऐसे लोगों को मुसलमानों का प्रतिनिधि समझकर उनके साथ सौदेबाजी की। जवाहरलाल जी ने उस स्टेटमेंट में कहा कि "सौदेबाजी में ऐसा कुछ निकल ही नहीं सकता क्योंकि वो अपना राजनीतिक स्वार्थ देखेंगे जो मुसलमानों को हिंदूओं से अलग रखने में है। तो हमारा जो अबतक का एप्रोच था वो गलत था। अब हमें सही एप्रोच लेना चाहिये"। और उस समय जो जवाहर लाल ने कहा वह सही एप्रोच था।. उन्होंने कहा कि ये जो ठेकेदार हैं ये निहित स्वार्थ वाले ठेकेदार हैं इनको इग्नोर कीजिए। इनकी फिकर न कीजिए। जनता में वह यह संदेश दे रहे थे कि कांग्रेस इज ए नेशनलीस्ट पार्टी शुड हैव मुस्लिम मास कॉन्टेक्ट। ये उनका शब्द था। जिनके बाल मेरे जैसे पके होंगे उनको ये याद होगा। और वो सही रास्ता था सौदेबाजी नहीं। उनको समझाना कि राष्ट्रवाद क्या है। और जवाहरलाल जी ने आशा प्रकट की थी कि वो समझ जायेंगे कि हम डायरेक्टली मुसलमान आदमी के पास पहुचेंगे। तो नेताओं को नहीं समझा सकते क्योंकि वो सौदेबाजी करेंगे।

लेकिन दुःख की बात है कि 37 में ये कहा गया और थोड़ा मुस्लिम मास कान्टैक्ट का प्रोग्राम कांग्रेस ने शुरू भी किया। इस बीच दूसरा महायुद्ध शुरू हुआ। फिर महायुद्ध के कारण एकदम कई गड़बड़ियाँ शुरू हो गई और मुस्लिम मांस कांटेक्ट प्रोग्राम के लिये समय ही नहीं मिला। बाद की सारी घटनाए आपके ख्याल में है। वो जो जवाहरलाल जी को साक्षात्कार हुआ वह योग्य था। मैं समझता हूँ कि ये जो जवाहरलाल जी को साक्षात्कार हुआ उसका सर्वपंथ समादर मंच के साथ कन्टीनुऐशन है, ऐसा आप कह सकते हैं। इसीलिए नेताओं के साथ, ठेकेदारों के साथ बातचीत मत करो। अपनी भूमिका क्या है यह सामान्य मुस्लिम आदमी को समझाओ। वह समझ सकता हैं। क्योंकि जैसा जस्टिस मुर्तजा हुसैन ने कहा कि वास्तव में झगड़े नहीं है। ये नेता लोग झगड़े लगा रहे हैं। यही भूमिका लेकर हम लोग काम कर रहे हैं।

समरसता आवश्यक

मतभेद परिवार में भी होते हैं, मनभेद नहीं होने चाहिये। यदि अलग–2 रिलिजंस होंगे तो एकता होगी ही ऐसी गारंटी नहीं हो सकती। क्योंकि हिंदू नाम का रेलिजन नहीं है और सौभाग्य की बात है कि दो साल पहले सुप्रीम कोर्ट में निर्णय आया कि हिन्दू इज नॉट ए रिलिजन, हिन्दू इज ए वे ऑफ लाइफ। उसके बाद ये एक सवा साल पहले दूसरा सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आया है कि धर्म अलग है रेलिजन अलग है। वैसे सुप्रीम कोर्ट ने कहा नहीं होता तो सत्य कुछ अलग होता, ऐसा नहीं है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी ये दो बातें इन्डोर्स की कि हिन्दू इज नॉट ए रिलिजन हिन्दू इज वे ऑफ लाइफ। धर्म अलग बात है कि रिलिजन अलग बात है, और इसीलिए हमने कहा कि हम प्रार्थना करते हैं कि युनिटी की बात मत करो। यदि दो अलग यूनिट होंगे तो युनिटी हो सकती है। हम दो यूनिट नहीं माानते । हम वननेस में विश्वास करते हैं। समरसता मानते है। उसी प्रकार ज्यादा देर तक सहिष्णुता नहीं चल सकती। यदि सहिष्णुता रखने से लाभ होगा ता सहिष्णुता रखूगाँ। लाभ नहीं होगा तो सहिष्णुता क्यों रखूगाँ ? थोड़ा आपके प्रभाव से आपको बाबू बेटा कहकर थोड़ा समय मांग लूंगा ज्यादा नहीं मांगा जा सकता।

तो यूनिटी की बात नहीं। हिंदू मुस्लिम युनिटी का मतलब कि हिंदू अलग युनिट मुस्लिम अलग युनिट, गलत बात है। सम्पूर्ण समाज एक है। और इसलिये समभाव नहीं समादर। इस भूमिका को लेकर हम लोग काम कर रहे हैं। इसी भूमिका को लेकर मैं समझता हूँ कि गणेश शंकर विद्यार्थी का प्राणार्पण हुआ। भाषणों से नहीं लेखों से नहीं, मुस्लिम लोगों के इकट्ठा वोट बैंक प्राप्त करने के लिये बेईमानी के साथ उनका प्रार्णापण नहीं हुआ। गैर जिम्मेवार राजनेताओं ने जो सांप्रदायिकता विरोधी प्रचार सेकुलरिज्म के नाम से किया है उनकों न सेकुलरिज्म से मतलब है न साम्प्रदायिकता से मतलब है। उनका मतलब प्राइम मिनिस्टर की गद्दी के साथ है। ऐसे बेईमान नेताओं के भाषणों की तरफ ध्यान न देते हुए हम सभी को समझें। और ये समझाने का काम केवल हिंदूओं और मुस्लिम के वस में नहीं है। हिंदूओं में भी कितने झगड़े हैं मुसलमानों में भी कितने झगड़े हैं।

इसलिए हमने सामाजिक समरसता मंच की भी स्थापना की थी। 1983 में इत्तिफाक से ऐसा हुआ कि डॉ० अम्बेडकर जी का अंग्रेजी कैलेन्डर के मुताबिक जन्मदिन 14 अप्रैल और डॉ० हेडगेवार जी का हिंदू कैलेन्डर के मुताबिक जन्मदिन वर्ष प्रतिपदा दोनों एक ही दिन आये। तो उस दिन हम लोगों ने समाजिक समरसता मंच की स्थापना की थी। केवल हिंदूओं में एकता निर्माण करने के लिये या वननेस का साक्षात्कार हिंदूओं को देने के लिये। तो दोनों आंदोलन सामाजिक समरसता मंच और सर्वपंथ समादर मंच दोनों की स्थापना की है। पूर्व वक्ता ने एक

बात ठीक कही कि एजुकेशन की आवश्यकता है, प्रोपेगंडा नहीं। प्रोपेगंडा अलग बात है, एजुकेशन अलग बात हैं। प्रोपेगंडा का मतलब इतना ही है कि मेरी पार्टी अच्छी है, बाकी सब खराब प्रचार याने आत्मस्तुति, पर निंदा। एजुकेशन का मतलब है, कि वास्तव में चारों ओर क्या–क्या कष्ट हैं ये लोगों को समझाना। और आज भी जो हिंदूस्थान में सारे झगड़े चल रहे हैं इसका एक कारण समझ लिजिए वह कारण बताकर मैं मेरा भाषण पूरा करूँगा।

ब्रिटेन और भारत

हमने ब्रिटिश पार्लियामेंटरी सिस्टम लायी। ये सिस्टम हमारे देश के अनुकूल नहीं है। 1908 में "हिंद स्वराज्य" नाम की पुस्तिका में महात्मा जी ने लिखा था कि ब्रिटिश पार्लियामेंटरी सिस्टम भारत के योग्य नहीं है। ये सिस्टम आ जायेगी तो वोटर्स की अवस्था वेश्या के समान हो जायेगी। 'Which can be purchased and sold'. महात्मा गांधी जी ने 1908 में कहा था। 1914 में जो अभी मैंने कहा था। ब्रिटिश पार्लियामेंटरी सिस्टम यहाँ सूट नहीं होगी। यह पद्धति संयुक्तिक नहीं। यहाँ गवर्नमेंट ऑफ इन्टरेस्ट काम करेगा। इसका मुझे विश्लेषण देने की आवश्यकता नहीं है। गवर्नमेंट ऑफ इन्टरेस्ट का मतलब होता है फंक्सनल रिप्रेजेंटेशन 'Functional Representation' काम करेगा। 1926 में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जेल में थे वहाँ उन्होंने आटो वायोग्राफी लिखी। उन्होंने कहा यदि हम ब्रिटिश पार्लियामेंट की सिस्टम अपनाते हैं तो सर्वप्रथम चुनाव के समय भ्रष्टाचार बढ़ेगा और फिर भ्रष्टाचार इतना बढ़ता जायेगा कि चारों ओर से देश में भ्रष्टाचार व्याप्त होगा। 1926 में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने कहा था। आज हमारे नेता भ्रष्टाचार विरोधी भाषण कर रहे हैं। लेकिन स्वराज्य प्राप्ति के 6 साल पहले दुनियाँ के एक श्रेष्ठ विचारक केवल भारत के ही नहीं, मानवेन्द्र नाथ राय उन्होंने एक किताब लिखी है। "पार्टी, पावर एन्ड पौलिटिक्स"। उन्होंने दुनिया के बहुत सारे कांस्टीच्यूशन का अध्ययन किया था। उन्होंने स्पष्ट कहा कि हम यदि ब्रिटिश पार्लियामेंटरी सिस्टम लाते हैं, हिंदुस्तान में या किसी भी देश में यह सिस्टम तब तक यशस्वी नहीं हो सकता जब तक पब्लिक एजुकेशन हंडरेड परसेंट नहीं है।

आज हमारे नेता हमको क्या बता रहे हैं कि ये सिस्टम यदि इंगलैंड में काम करती है तो हमारे यहां क्यों नहीं काम कर सकती। वास्तव में विन्स्टन चर्चिल ने कहा कि यह सिस्टम सबसे अच्छी है, इसलिये नहीं, कम से कम खराब है इसलिये यह स्वीकार की हैं। वे भी दोष को जानते हैं। खैर, अब इंग्लैंड में काम करती है इसलिये हमारे यहां क्यों नहीं काम करती ऐसा ये कह रहे हैं। एम० एन० राय ने कहा कि इंग्लैंड में पब्लिक एजुकेशन बहुत है। वहाँ मैनेजर होता है वह भी पढ़ता हैं, नागरिक पढ़ता है, वोटर पढ़ता है। यहाँ यदि लोग निरक्षर और अशिक्षित हैं,

आप बहुत अच्छा प्रोग्राम देंगे। कौन पढ़ेगा? उसके बाद देहरादून में उनका एक शिविर हुआ। एम० एन० राय की विशेषता यह थी कि उनका मास फोरम नहीं था लेकिन वो स्वयं इंटेलेक्चुअल जायंट (महापंडित) थे एवं उनके सारे शिष्य इंटेलक्चुअल जायंट थे। जैसे जस्टिस चंद्रचूड, लक्ष्मण राजश्री जोशी। उन शिष्यों ने एक प्रश्न किया कि करोड़ों लोग निरक्षर हैं। पब्लिक एजुकेशन करने में तो बहुत समय लगेगा यह तो बड़ा लंबा मार्ग है । एम०एन० राय का उत्तर बहुत अच्छा रहा उन्होंने कहा . Yes it may be a long way, but if would be the only way, then it is also the shortest way. ये लम्बा रास्ता हो सकता है लेकिन यदि यह एकमात्र रास्ता हम जानते हैं तो सबसे नजदीक का रास्ता वही हो सकता है।

आज हम उसका अनुभव कर रहे हैं। सिस्टम नयी है। हम जानते हैं कि आज का कांस्टीट्यूशन में, 1935 एक्ट 70% है। बाकी अंग्रेजों का, थोड़ा सा बाहर के लोगों का अनुकरण करते हुए हमारा कांस्टीच्यूशन है। वहाँ ये पार्लियामेंटरी सिस्टम है, यही सिस्टम हमने यहाँ लायी। लेकिन फिर भी दोनों में अंतर हैं। दोनों देशों का ऐतिहासिक घटना क्रम इतना अलग है जिसके कारण हिंदुस्तान में ये गड़बड़ चल रही है। हिन्दू मुसलमान हैं, फारवार्ड बैकवर्ड है, बैकवर्ड अपर क्लासेस हैं, सवर्ण विरुद्ध अस्पृश्य ये सारी गड़बड़ी हैं।

आप ऐसा मत समझिये कि सारे दलित एक हैं। हमारे यहाँ ऐसी जातियाँ है कि एक दलित जातियाँ दूसरे दलित जातियों के हाथों से पानी नहीं पीते। कुछ गाँव ऐसे हैं जहाँ दलित ही हैं, अलग अलग जाति के हैं। वहाँ एक दलित जाति का कुआँ अलग है, दुसरे दलित जाति का कुआँ अलग है। पानी नहीं पी सकते। सब जगह झगड़े हैं।

समाज प्रबोधन

किंतु पब्लिक एजुकेशन न होते हुए डेमोक्रेसी आने से क्या हुआ ? वहाँ कैसे आई हमारे यहाँ कैसे आई थोड़ा देखो। आज वहां डेमोक्रेसी है ऐसा कहते हैं क्योंकि वहाँ एडल्ट फ्रेंचाइज (वयस्क मताधिकार) है। हमारे देश में भी वयस्क मताधिकार है। एडल्ट फ्रेंचाइज माने हरेक वयस्क को वोट का राइट है। इंगलैंड में भी है वहाँ कैसे आया ? वहाँ पहले केवल राजशाही थी। मोनार्की। उसके खिलाफ डेमोक्रेसी का झगड़ा कब शुरू हुआ आपको आश्चर्य होगा। बारहवें शताब्दी के अंतिम दशक में शुरु हुआ। रिचडली 3, रिचडली 1 - इनके समय ही ये शुरु हुआ। लेकिन ज्यादातर 1215 का जो मैग्नाचार्ट है वह सब लोग जानते हैं। 1215 में पहली स्टेप आयी। पार्लियामेंट शब्द 1295 में आया। किंग कांऊसिल को पार्लियामेंट 1295 में कहा गया। लेकिन पार्लियामेंट के जो अधिकार आज हैं, वे नहीं थे। केवल एडवाइजरी बॉडी, जैसे कि किंग कांउसिल एडवाइजरी बॉडी है

वैसे ये भी एडवाइजरी बॉडी (सलाहकार मंडली) थी। तेरहवीं शताब्दी के अंत में पार्लियामेंट शब्द का निर्माण हुआ, लेकिन पार्लियामेंट की पावर्स नहीं थी। ये कब आई ? 1688 के जिसको लोग ग्लोरियस रिवोल्युशन कहते हैं, उसके पश्चात् यह मान्य हुआ। मोनार्क सुप्रीम नहीं पार्लियामेंट सुप्रीम है राजा श्रेष्ठ नहीं अपितु पार्लियामेंट सर्वश्रेष्ठ है। पार्लियामेंट के शब्द मोनार्क—राजा को सुनने चाहिए यह विचार 1688 में पहली बार आया। मानो 1215 में मैग्नाचार्टा, तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभ में। 17 वीं शताब्दी के अंत में पार्लियामेंट की सुप्रीमैसी आयी। क्योंकि सबको अधिकार नहीं था। 1688 में कितने लोगों को पार्लियामेंट में मत देने का अधिकार था ? केवल चार परसेन्ट लोगों को । टोटल पोपुलेशन के चार परसेन्ट लोगों को मतदान का अधिकार था। फिर उन्होंने कहा कि 1832 में हमने जो एक्ट बनाया—इट वाज ए लोंग लीप टुर्वाड्स डेमोक्रेसी ऐसा कहा। किंतु उस एक्ट के द्वारा कितने लोगों को मतदान का अधिकार मिला ? केवल 10 प्रतिशत् लोगों को। टोटल पोपुलेशन के 10 प्रतिशत के लोग केवल मतदान के अधिकारी थे 1832 में। फिर उसके बाद 1867, 1882 जिसमें और भी क्षेत्र बढ़ा। 1918 में ज्यादा से ज्यादा लोगों को मतदान का अधिकार मिला। सभी को मिला। और आपको आश्चर्य होगा कि हमारे यहाँ अभी बात चली है कि महिलाओं को 33% रिजर्वेशन होना चाहिए। लेकिन इंग्लैंड में क्या हुआ ? वहाँ की महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला 1918 में। और वो भी पूरा अधिकार नहीं मिला। उन्होंने अधिकार तो दिया लेकिन पुरुषों को अधिकार 18 साल के बाद था, महिलाओं को 21 साल के बाद मिला। पार्लियामेंट में प्रश्न आया, आपने दोनों में फर्क क्यों रखा। उन्होंने कहा 21 साल का हो जाने से कुछ महिलाओं को अपवाद किया जाएगा। क्यों ? उन्होंने कहा—यह एक एक्सपेरीमेंट हैं। एक्सपेरिमेंट कहां तक सफल होता है देखेंगे। सफल हुआ तो सब महिलाओं को अधिकार देंगे नहीं तो यही तक सीमित रखेंगे। सभी महिलाओं को और सभी पुरुषों को मतदान का अधिकार 1928 में मिला। याने यह जो संघर्ष चला, यह 1215 से 1928 तक चला। कितनी शताब्दियां हो गई ? कई शताब्दियों का, 13वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक ये संघर्ष चला। अर्थात् सात शताब्दी तक संघर्ष चला। संघर्ष में लोगों को एजुकेशन मिलता है। पोलिटीकल एजुकेशन होता है। संघर्ष में लोगों का माइंड मोल्ड होता है। मन की जन्म जड़े धनी होती है। मेथेमेटिक्स तैयार होता है। इसके कारण वहाँ डेमोक्रेटिक टेम्परामेंट पहले आया, डेमोक्रेटिक इंस्टीट्यूशंस बाद में आयी। अब ये 700 साल का संघर्ष है। उसमें मासेस का पौलिटीकल एजूकेशन हुआ उसके कारण मासेस का डेमोक्रेटिक टेम्परामेंट पहले तैयार होना सर्वप्रथम पूरे समाज की जनतंत्र की मानसिकता तैयार होना और बाद में जनतंत्र के अधिकार प्राप्त होना ऐसा इंग्लैंड का ऐतिहासिक घटनाक्रम बतलाता है।

भारत का घटनाक्रम

हमारे देश में क्या हुआ ? सर्वप्रथम पश्चिमी पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी 1920 में आयी। मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड के रिफोर्म्स के फलस्वरूप। उस समय हिंदुस्थान की जनसंख्या 24 करोड़ थी। 24 करोड़ में से कितने लोगों को मतदान का अधिकार 1920 में था ? उस समय फ्युडल राज्य पद्धति थी। कांउसिल ऑफ स्टेटस के लिये 17000 मतदाताओं को मतदान का अधिकार था। और नेशनल एसेंबली के लिये 9 लाख नौ हजार लोगों को अधिकार था। हालांकि 17000 में से बहुत सारे लोग 9 लाख नौ हजार में शामिल थे। फिर भी दोनों मिलकर कितनी संख्या होगी देखिए। दस लाख से कम हो जाती है। तो दस लाख से कम लोगों को मतदान का अधिकार 1920 में था। और वह भी Without any struggle for democracy.स्ट्रगल तो फ्रीडम के लिए चला था, पर डेमोक्रेसी के लिये स्ट्रगल नहीं था। जैसे कांस्टीच्यूशन तैयार हो गई, करोड़ो लोगों को एकदम मतदान का अधिकार मिला इसके कारण साइकोलॉजी में क्या अंतर नहीं आएगा ? इंग्लैंड में लोगों ने सात शताब्दी तक स्ट्रगल चलाया जिसके कारण पौलिटिकल एजुकेशन हुआ, जिसके कारण मॉल्डिंग ऑफ माइंड्स हुआ, डेमोकेटिक टेम्प्रामेंट हुआ। इन हिस्टोरिकल प्रोसेस, और एकदम 1950 के बाद एकाएक करोड़ों लोंगो को अधिकार मिल गया। यह ऐसा ही है जैसा कोई आदमी गरीबी से ऊपर आता है, धीरे-धीरे मेहनत करते करते बड़ा श्रीमान हो जाता है वो एक-एक पैसे की कीमत जानता है। लेकिन जो सीधे शून्य से एक बार पैदा होते हैं या उसी का लड़का जो श्रीमंत अवस्था में पैदा होते हैं उसके लिये पैसे की क्या कीमत है ? तो पैसे के बारे में जो दृष्टिकोण सेल्फमेड पिता का होता है, और ऐसे लड़के का होता है, इसमें जैसा अन्तर है, वैसा ही इंगलैंड की और यहाँ की सिस्टम एकदम समान है, ऐसा बोलने से यह अंतर स्पष्ट नहीं होता। वहाँ सात शताब्दी के बाद ये टेम्परामेंट पैदा हुआ यहाँ ये टेम्परामेंट नहीं है, और जबतक टेम्परामेंट नहीं है और एजुकेशन नहीं है, तो फिर ये सारे जो हैं लालू यादव वगैरह पैदा होंगे ही, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। तो यह समझना कि हम ऐसी कोई पद्धति बनायेंगे जिसमें से लालू यादव निर्माण होना ही बन्द हो, असंभव है। रास्ता एक ही है-पब्लिक एजुकेशन। यह रास्ता सबसे लंबा है लेकिन यही एकमात्र रास्ता होने के कारण नजदीक का रास्ता है । इसी का एक रास्ता सर्वपंथ समादर मंच है।

धन्यवाद !

धर्म एक ही है – सृष्टि का धर्म। जैसे गुरुत्वाकर्षण (ग्रेविटेशन) धर्म है। किन्तु पश्चिम में उसका सर्वप्रथम साक्षात्कार न्यूटन को हुआ। इसलिए उसको न्यूटन्स लॉ कहते है। इसका मतलब यह नही कि न्यूटन के पहले यह नही था। वह सनातन है, चिरन्तन है। लॉ ऑफ ग्रेविटेशन – गुरुत्वाकर्षण के प्राकृतिक नियम का साक्षात्कारी पुरुष पश्चिम में भले ही न्यूटन था परन्तु हमारे यहाँ पहले ही इसका साक्षात्कार हो चुका था। जैसे लॉ ऑफ रिलेटिविटी सनातन है, चिरन्तन है। पश्चिम में आइन्स्टीन ने पहले पहल उसका साक्षात्कार किया इसलिए लॉ ऑफ रिलेटिविटी को आइन्स्टीन्स लॉ कहते हैं। किंतु यह आइन्स्टीन का बनाया हुआ नही है, उन्होंने केवल देखा। वैसे ही पहले पहल धर्म देखने वाले हिंदू थे इसलिए उसे हिंदू धर्म कहा गया। वो धर्म है, हिंदू धर्म नही है। पहले देखने वाले हिंदू थे, यह ऐतिहासिक घटना है।

......इसी पुस्तक से

भारतीय श्रमशोध मंडल
3122, संगतराशान, पहाड़गंज, नई दिल्ली -55